पंच परमेष्ठी पूजन

रचयिता - श्री राजमलजी पवैया

प्रस्तुति - तत्त्वचर्चा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

स्थापना

अर्हन्त सिद्ध आचार्य नमन! हे उपाध्याय! हे साधु! नमन।
जय पंच परम परमेष्ठी जय, भवसागर तारणहार नमन।।
मन-वच-काया-पूर्वक करता हूँ, शुद्ध-हृदय से आह्वानन।
मम-हृदय विराजो! तिष्ठ! तिष्ठ! सन्निकट होहु मेरे भगवन।।
निज-आत्मतत्त्व की प्राप्ति-हेतु, ले अष्ट-द्रव्य करता पूजन।
तव चरणों के पूजन से प्रभु, निज-सिद्धरूप का हो दर्शन।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

स्थापना

ॐ ह्रीं श्री अरिहंतसिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु पञ्चपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर! अवतर! संवौषट्! (आह्वाननं)

ॐ ह्रीं श्री अरिहंतसिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु पञ्चपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ! तिष्ठ! ठ:! ठ:! (स्थापनम्)

ॐ ह्रीं श्री अरिहंतसिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु पञ्चपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्! (सन्निधिकरणम्)

/Tatvacharcha GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

मैं तो अनादि से रोगी हूँ, उपचार कराने आया हूँ।
तुम सम उज्ज्वलता पाने को, उज्ज्वल जल भरकर लाया हूँ।।
मैं जन्म जरा मृतु नाश करूँ, ऐसी दो शक्ति हृदय स्वामी।
हे! पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अंतर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री पञ्चपरमेष्ठिभ्य: जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

संसार-ताप में जल-जल कर, मैंने अगणित दुःख पाए हैं।
निज शांत-स्वभाव नहीं भाया, पर के ही गीत सुहाए हैं।।
शीतल चंदन है भेंट तुम्हें, संसार-ताप नाशो स्वामी।
हे! पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अंतर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री पञ्चपरमेष्ठिभ्य: संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

दुःखमय अथाह भवसागर में, मेरी यह नौका भटक रही।
शुभ-अशुभ भाव की भँवरों में, चैतन्य शक्ति निज अटक रही।।
तंदुल हैं धवल तुम्हें अर्पित, अक्षयपद प्राप्त करूँ स्वामी।
हे! पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अंतर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री पञ्चपरमेष्ठिभ्य: अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

मैं काम-व्यथा से घायल हूँ, सुख की न मिली किंचित् छाया।
चरणों में पुष्प चढ़ाता हूँ, तुमको पाकर मन हरषाया।।
मैं कामभाव विध्वंस करूँ, ऐसा दो शील हृदय स्वामी।
हे! पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अंतर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री पञ्चपरमेष्ठिभ्य: कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

मैं तो अनादि से रोगी हूँ, उपचार कराने आया हूँ।
तुम सम उज्ज्वलता पाने को, उज्ज्वल जल भरकर लाया हूँ।।
मैं जन्म जरा मृतु नाश करूँ, ऐसी दो शक्ति हृदय स्वामी।
हे! पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अंतर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री पञ्चपरमेष्ठिभ्य: जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

मैं क्षुधा-रोग से व्याकुल हूँ, चारों गति में भरमाया हूँ।
जग के सारे पदार्थ पाकर भी, तृप्त नहीं हो पाया हूँ।।
नैवेद्य समर्पित करता हूँ, यह क्षुधा-रोग मेटो स्वामी।
हे! पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अंतर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री पञ्चपरमेष्ठिभ्य: क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

मोहांध महाअज्ञानी मैं, निज को पर का कर्त्ता माना।
मिथ्यातम के कारण मैंने, निज आत्म-स्वरूप न पहचाना।।
मैं दीप समर्पण करता हूँ, मोहांधकार क्षय हो स्वामी।
हे! पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अंतर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री पञ्चपरमेष्ठिभ्य: मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

कर्मों की ज्वाला धधक रही, संसार बढ़ रहा है प्रतिपल।
संवर से आस्रव को रोकूँ, निर्जरा सुरभि महके पल-पल।।
मैं धूप चढ़ाकर अब आठों- कर्मों का हनन करूँ स्वामी।
हे! पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अंतर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री पञ्चपरमेष्ठिभ्य: अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

निज-आत्मतत्त्व का मनन करूँ, चिंतवन करूँ निज चेतन का।
दो श्रद्धा ज्ञान चारित्र श्रेष्ठ, सच्चा पथ मोक्ष निकेतन का।।
उत्तम फल चरण चढ़ाता हूँ, निर्वाण महाफल हो स्वामी।
हे! पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अंतर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री पञ्चपरमेष्ठिभ्य: मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

जल चंदन अक्षत पुष्प दीप, नैवेद्य धूप फल लाया हूँ।
अब तक के संचित कर्मों का, मैं पुंज जलाने आया हूँ।।
यह अर्घ्य समर्पित करता हूँ, अविचल अनर्घ्यपद दो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अंतर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री पञ्चपरमेष्ठिभ्य: अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

जयमाला

(ज्ञानोदय छन्द)

जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभो,
निज-ध्यान लीन गुणमय अपार।
अष्टादश दोष रहित जिनवर,
अरिहन्त देव को नमस्कार।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

(ज्ञानोदय छन्द)

अविकल अविकारी अविनाशी, निजरूप निरंजन निराकार।
जय अजर अमर हे! मुक्तिकंत, भगवंत सिद्ध को नमस्कार।।

छत्तीस सुगुण से तुम मंडित, निश्चय रत्नत्रय हृदय धार।
हे! मुक्तिवधू के अनुरागी, आचार्य सुगुरु को नमस्कार।।

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ज्ञानोदय छन्द)

एकादश-अंग पूर्व-चौदह के, पाठी गुण पच्चीस धार।
बाह्यांतर मुनि-मुद्रा महान्, श्री उपाध्याय को नमस्कार।।

व्रत समिति गुप्ति चारित्र प्रबल, वैराग्य भावना हृदय धार।
हे! द्रव्य-भाव संयममय मुनिवर, सर्व साधु को नमस्कार।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ज्ञानोदय छन्द)

बहु पुण्य संयोग मिला नरतन, जिनश्रुत जिनदेव चरण दर्शन।
हो सम्यक् दर्शन प्राप्त मुझे, तो सफल बने मानव जीवन।।

निज पर का भेद जानकर मैं, निज को ही निज में लीन करूँ।
अब भेदज्ञान के द्वारा मैं, निज आत्म स्वयं स्वाधीन करूँ।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ज्ञानोदय छन्द)

निज में रत्नत्रय धारण कर, निज-परिणति को ही पहचानूँ।
पर-परिणति से हो विमुख सदा, निजज्ञान तत्त्व को ही जानूँ।।

जब ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता विकल्प तज, शुक्ल ध्यान मैं ध्याऊँगा।
तब चार घातिया क्षय करके, अरिहन्त महापद पाऊँगा।।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ज्ञानोदय छन्द)

है निश्चित सिद्ध स्वपद मेरा, हे प्रभु! कब इसको पाऊँगा।
सम्यक् पूजा-फल पाने को, अब निज स्वभाव में आऊँगा।।

अपने स्वरूप की प्राप्ति-हेतु, हे प्रभु! मैंने की है पूजन।
तब तक चरणों में ध्यान रहे, जब तक न प्राप्त हो मुक्ति सदन।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंतसिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु पञ्चपरमेष्ठिभ्य: जयमाला-पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

हे! मंगलरूप अमंगल-हर,
मंगलमय मंगलगान करूँ।
मंगलों में प्रथम श्रेष्ठ मंगल,
णमोकार मंत्र का ध्यान करूँ।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha